गिजुभाई का गुलदस्ता–6

मुनिया रानी

गिजुभाई बधेका

अनुवाद, प्रस्तुति और चित्रांकन
आबिद सुरती

नेहरू बाल पुस्तकालय

गिजुभाई का गुलदस्ता–6

मुनिया रानी

गिजुभाई बधेका

अनुवाद, प्रस्तुति और चित्रांकन
आबिद सुरती

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA
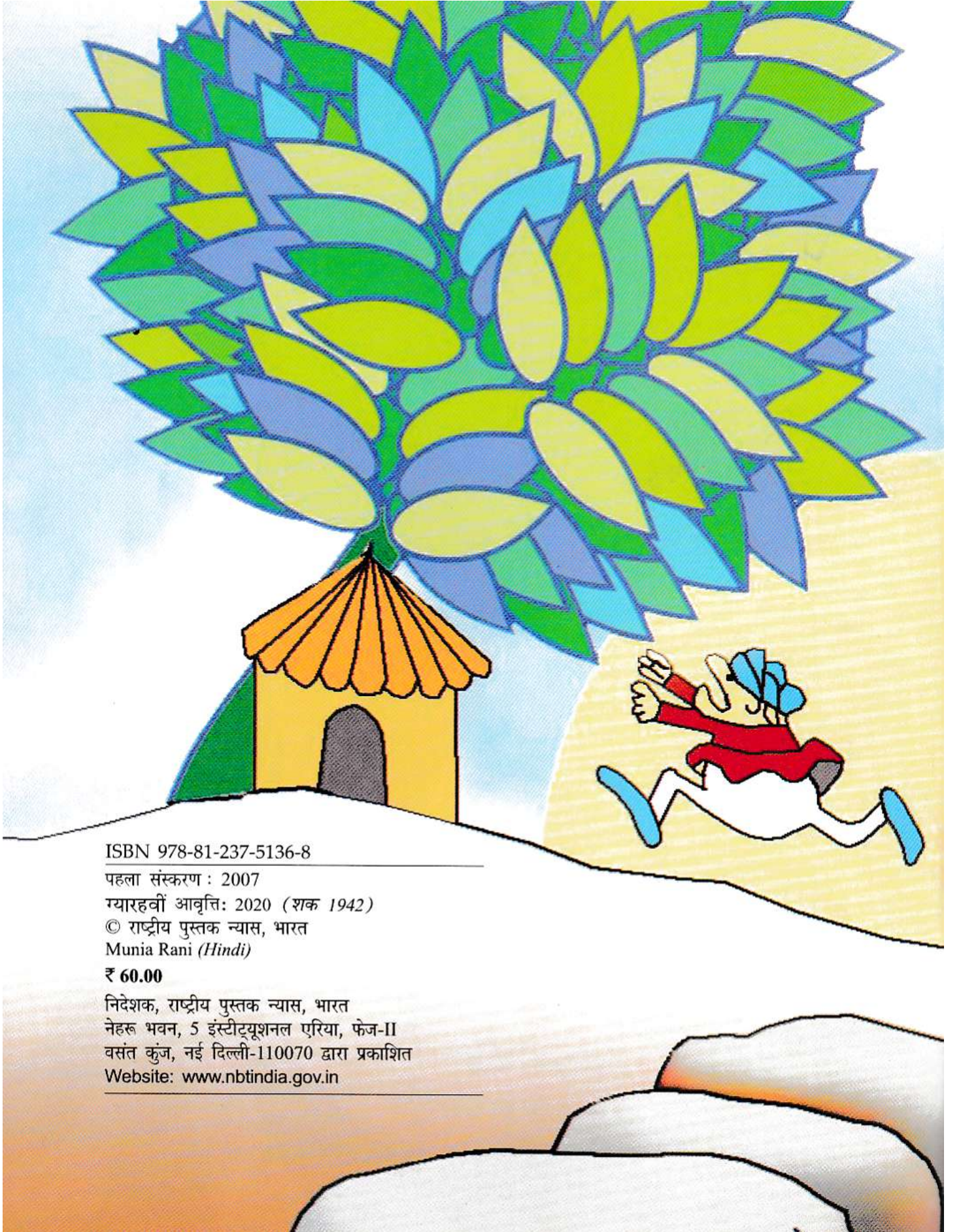
ISBN 978-81-237-5136-8

पहला संस्करण : 2007

ग्यारहवीं आवृत्तिः 2020 *(शक 1942)*

Munia Rani *(Hindi)*

₹ 60.00

निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 द्वारा प्रकाशित
Website: www.nbtindia.gov.in

अगर मगर

तिकड़की जोशी

चीची चिड़िया

मैं हूं मरद मुछंदर

मुनिया रानी

अल्लम गल्लम करता हूं

मूंछों वाली नानी
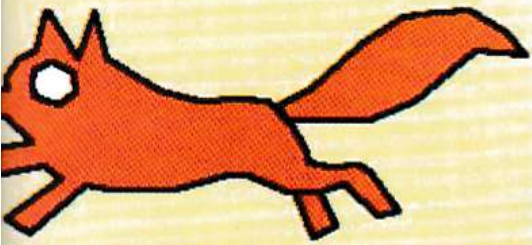
शिक्षक भाई-बहनों से

लीजिए, ये हैं बाल-कथाएं। आप बच्चों को इन्हें सुनाइए। बच्चे इनको खुशी-खुशी और बार-बार सुनेंगे। आप इन्हें रसीले ढंग से कहिए, कहानी सुनाने के लहजे से कहिए। कहानी भी ऐसी चुनें, जो बच्चों की उम्र से मेल खाती हो। भैया मेरे, एक काम आप कभी न करना। ये कहानियां आप बच्चों को रटाना नहीं। बल्कि, पहले आप खुद अनुभव करें कि ये कहानियां जादू की छड़ी-सी हैं।

यदि आपको बच्चों के साथ प्यार का रिश्ता जोड़ना है तो उसकी नींव कहानी से डालें। यदि आपको बच्चों का प्यार पाना है तो कहानी भी एक जरिया है। पंडित बन कर कभी कहानी नहीं सुनाना। कील की तरह बोध ठोकने की कोशिश नहीं करना। कभी थोपना भी नहीं। यह तो बहती गंगा है। इसमें पहले आप डुबकी लगाएं, फिर बच्चों को भी नहलाएं।

गिजुभाई

अगर मगर

एक थी नदी। उसमें अगर नाम का एक मगर रहता था। गरमियों के दिन आए। नदी का पानी सूख गया। पानी की एक बूंद भी न बची तो अगर मगर के प्राण भी सूखने लगे। वह न तो चल सकता था, न हिल-डुल सकता था। नदी से कुछ दूर एक तालाब था। उसमें थोड़ा पानी बचा था। लेकिन अगर मगर वहां जाए कैसे? तभी वहां से एक पारसी बाबा गुजरे। अगर मगर ने उनसे प्रार्थना की, "बाबाजी-बाबाजी, आप मुझे तालाब तक पहुंचा दें तो भगवान आपका भला करेगा।' वे बोले, 'पहुंचा टो डूं, लेकिन टेरा क्या भरोसा? टालाब पहुंच कर टू मेरे को ही खा जाएगा।' अगर मगर ने कहा, 'भला मैं आपसे ऐसा सलूक कैसे कर सकता हूं?'

बाबाजी थे भोले। उन्होंने अगर मगर पर भरोसा कर उसे उठा लिया और तालाब
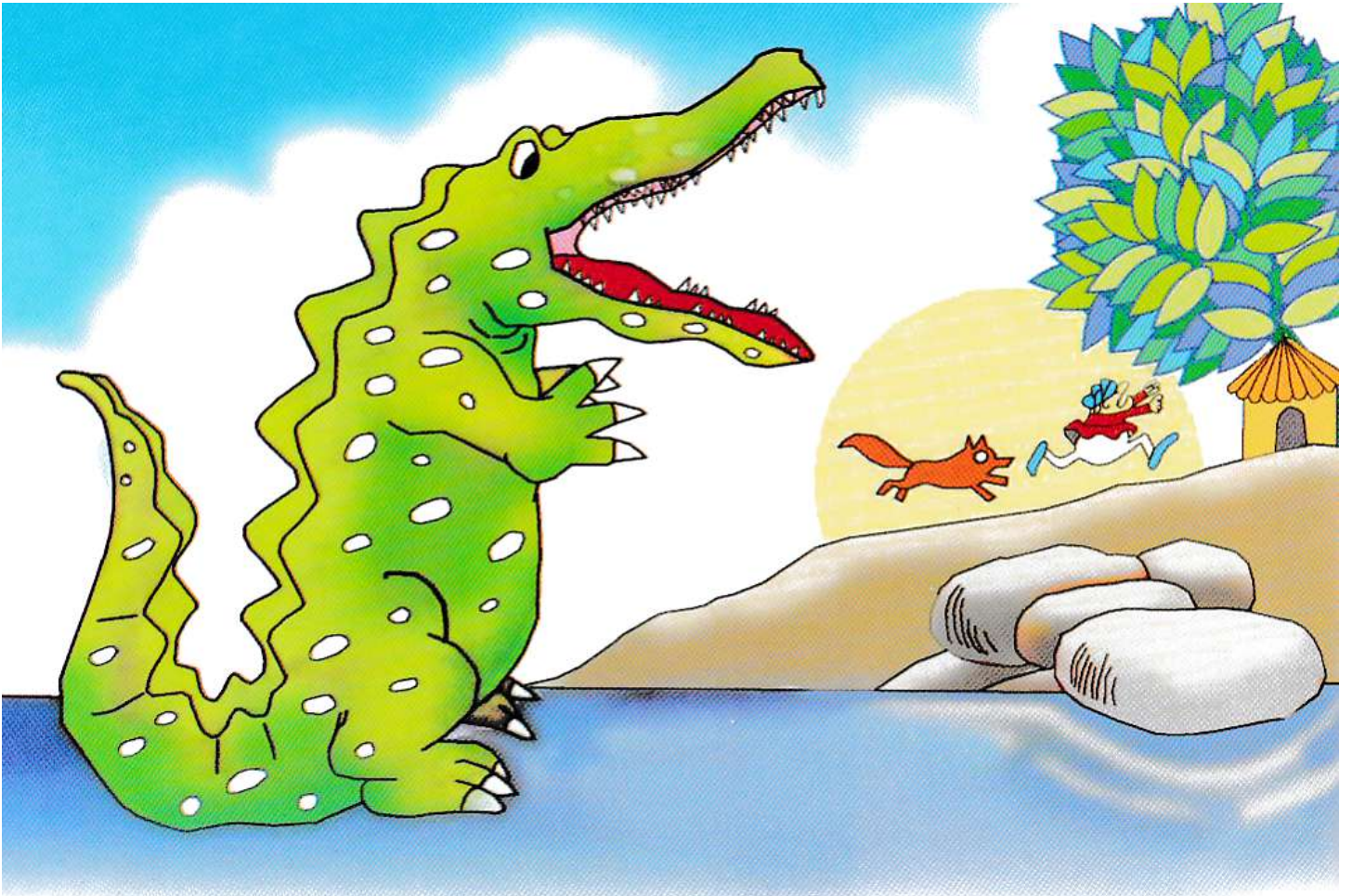
तक ले आए, लेकिन जैसे ही उसे पानी में छोड़ा कि उसने बाबाजी का पांव पकड़ लिया।

बाबाजी बोल उठे, 'छोड डे मुझे। टूने जबान डी है। मुझे टू नहीं खा सकटा।' अगर मगर ने कहा, "नहीं खाऊंगा तो मैं खुद ही मर जाऊंगा। मेरे पेट में चूहे-बिल्ली-कुत्ते बोल रहे हैं। आठ-आठ दिन का भूखा जो हूं।" कह कर उसने बाबाजी को पानी में खींचना शुरू किया। बाबाजी बोले, 'जरा ठहर भी जा। बाट इंसाफ की है। डेख, कोई आ रहा है।' वह थी एक सफेद बिल्ली। उसने काला चश्मा पहन रखा था। बाबाजी ने जोड़ा, 'हम उससे इंसाफ करवाएंगे।'

अगर मगर ने सोचा, थोड़ी देर में क्या फर्क पड़ेगा? चलो, यह तमाशा भी देख लेते हैं। बाबाजी का पांव मजबूती से पकड़े हुए वह धूर्त बोला, 'हां,

सफेद बिल्ली से इंसाफ करवा लो, चाहे काली बिल्ली से करवा लो। जिससे चाहो उससे करवा लो, मुझे मंजूर है।' बाबाजी ने काले चश्मे वाली बिल्ली को सारा किस्सा सुनाया। फिर पूछा, 'अब टुम ही बटाओ, यह अगर मगर मुझे खाना चाहटा है। क्या ये इंसाफ की बाट है?' काला चश्मा आंखों पर से हटा कर सफेद बिल्ली बोली, 'मैं इंसाफ नहीं कर सकती, क्योंकि मैं वकील हूं। मेरा काम मुकदमा लड़ना है, न्याय करना नहीं।'

वह गई तो अगर मगर फिर से बाबाजी का पांव खींचने लगा। वे बोले, 'इटना रुका है टो टोड़ा और सही। डेख, सामने से सफेद चश्मा लगाए काली लोमड़ी आ रही है। हम उससे इंसाफ करने को कहेंगे। आखिरी बार। फिर भले ही मिर्च-मसाला डाल कर टू मुझे खा जाना।'

बाबाजी ने सफेद चश्मे वाली काली लोमड़ी को सारा किस्सा सुनाया। फिर कहा, 'अब टुम ही बटाओ, यह अगर मगर मुझे खाना चाहटा है, क्या ये इंसाफ की बाट है?'

यह सुन कर काली लोमड़ी खुश हो गई, क्योंकि वह न्यायाधीश थी और बहुत दिनों से कोई उसके पास पचड़ा ले कर नहीं आया था। दूसरे, वह सयानी भी उतनी ही थी। अब तक वह जान गई थी कि अगर मगर धूर्तों का सरदार है, उसे सबक सिखाना चाहिए। इसलिए काली लोमड़ी ने आंखों पर से सफेद चश्मा हटा कर बाबाजी से उलटा सवाल पूछा, 'तो आप पड़े थे सूखी नदी में और मगर आपको उठा कर यहां ले आया. सही?' अगर मगर तुरंत बोल उठा, 'गलत। वहां तो मैं पड़ा था और उठा कर मुझे बाबाजी लाए।'

काली लोमड़ी मुस्काकर बोली, 'ओह, तो तुम पड़े थे वहां। अब जरा यह भी बाता दो कि कैसे पड़े थे?' उसकी बातों में आ कर अगर मगर ने बाबाजी का पांव छोड़ दिया। फिर पानी में से किनारे पर आ कर लेटते हुए

कहा, 'ऐसे पड़ा था।' इस मौके का लाभ उठा कर बाबाजी भागे और उसके पीछे सफेद चश्मे वाली काली लोमड़ी भी भाग निकली। अगर मगर जल-भुन कर राख हो गया। उसने वहीं सौगंध ली, 'नहीं छोड़ूंगा, मैं उस काली-कलूटी को, नहीं छोड़ूंगा।'

कुछ दिनों बाद मूसलाधार वर्षा शुरू हुई, अगर मगर नदी में जा कर रहने लगा। एक रोज काली लोमड़ी नदी पर पानी पीने जा रही थी। अगर मगर ने उसे दूर से ही देख लिया। वह फर्राटे से किनारे पहुंचा और छिछले पानी में छिप कर बैठ गया। न हिले न डुले। सिर्फ उसकी दो आंखें पानी की सतह से ऊपर थीं। काली लोमड़ी की नजरों में वे आ गईं। वह किनारे के रेत पर से ही बोली :

नदी के जल दो नयन झिलमिल
जैसे रात में दो सितारे झिलमिल

यह सुन कर अगर मगर ने अपनी एक आंख मींच ली। मुस्कराते हुए काली लोमड़ी ने फिर कहा :

नदी के जल दो नयन झिलमिल
जैसे रात में एक सितारा झिलमिल

अगर मगर समझ गया कि सफेद चश्मे वाली काली लोमड़ी ने उसे पहचान लिया है। चिढ़ कर सोचा–कोई बात नहीं। अगली बार मुलाकात होगी तो उसे नानी के साथ नाना भी याद दिला दूंगा।

थोड़े दिन बीत गए। काली लोमड़ी कहीं दिखाई नहीं दी। एक रोज वह नदी में पानी पी रही थी कि
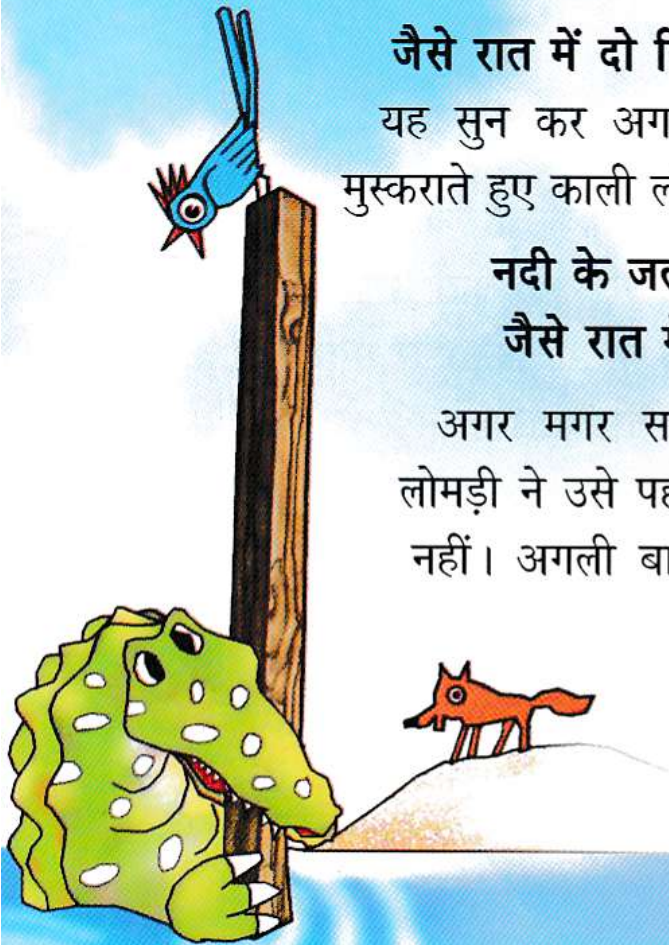
यकायक अगर मगर ने आ कर उसका पांव पकड़ लिया। काली लोमड़ी ने सोचा, अब मेरी खैर नहीं। यह पट्ठा मेरे प्राण ले कर ही दम लेगा। लेकिन वह जरा भी नहीं डरी। बल्कि ठहाका लगा कर हंसते हुए बोली, 'अरे मूर्ख, यह डंडा किस लिए पकड़ रखा है? मेरा पैर पकड़ न!'

अगर मगर को लगा, उससे कुछ भूल हुई है। उसने फौरन काली लोमड़ी का पांव छोड़ दिया और पास पड़े हुए एक डंडे को पकड़ लिया। लोमड़ी हंस दी। भागते हुए उसने कहा, 'अगर मगर, वह मेरा पैर नहीं, डंडा है। देखो, मेरे चार पैर कैसे दौड़ रहे हैं!'

अगर मगर ने सिर पीट लिया, लेकिन निराश होना वह नहीं जानता था। दूसरे दिन से उसने फिर काली लोमड़ी का इंताजार शुरू कर दिया। दिन-रात वह घाट पर नजरें बिछाए पड़ा रहता। लेकिन काली लोमड़ी नदी पर क्यों आती? अगर मगर सोच में पड़ गया। अब क्या किया जाए?

नदी किनारे एक अमराई थी। वहां काली लोमड़ी अपनी सहेलियों के साथ रोजाना आम खाने आती।

अगर मगर को पता चला तो वह तुरंत अमराई में पहुंच गया। वहां माली ने आम उतार कर बड़े-बड़े दो ढेर बनाए थे। अगर मगर उनमें के बड़े ढेर में छिप गया। रोज की तरह काली लोमड़ी अपनी सहेलियों के साथ बतियाते हुई अमराई में आई। तभी उसकी नजर बड़ी-बड़ी दो आंखों पर पड़ी। वह सावधान हो गई। फिर अपनी सहेलियों से कहा, 'सुनो...सुनो...सुनो। आज हम उस बड़े ढेर से आम नहीं खाएंगे। वह हिस्सा भगवान का है। छोटे ढेर से जितने चाहो उतने खा लो।' सहेलियों ने वैसा ही किया और आम खा कर सब चली गईं।

काली लोमड़ी इस बार भी हाथ नहीं लगी। अगर मगर ने सोचा, अब तो

सिर्फ एक ही उपाय बचा है और वह है काली लोमड़ी की गुफा में जा कर छिप जाने का। वहां तो वह फंस ही जाएगी।

दूसरे रोज अगर मगर गुफा में घुस कर बैठ गया। दिन भर जंगल में भटकने के बाद जब अंधेरा होने को आया तो काली लोमड़ी अपनी गुफा में लौटी। भीतर पांव रखते ही उसे अगर मगर की दीये-सी दो आंखें दिखाई दीं। वह बोल उठी 'कमाल है! मेरे घर में आज दो-दो दीये जल रहे हैं!' यह सुन कर अगर मगर ने अपनी एक आंख बंद कर ली। काली लोमड़ी ने तपाक से कहा, 'धत्तेरी की। एक दीये का तेल खतम हो गया!' अगर मगर ने अपनी दोनों आंखें बंद कर लीं। यह देख काली लोमड़ी ने झूठ-मूठ अफसोस जताते हुए कहा, 'हाय री किस्मत! दोनों दीये बुझ गए। अब इस अंधेरी गुफा में रहने का कोई मतलब नहीं है। कोई नया घर, नई गुफा या कोटर ढूंढ़ना पड़ेगा। क्यों न अभी से तलाश शुरू कर दी जाए।'

उस रोज के बाद से सफेद चश्मे वाली काली लोमड़ी ऐसी गायब हुई कि अगर मगर तो क्या, किसी को भी आज तक दिखाई नहीं दी।
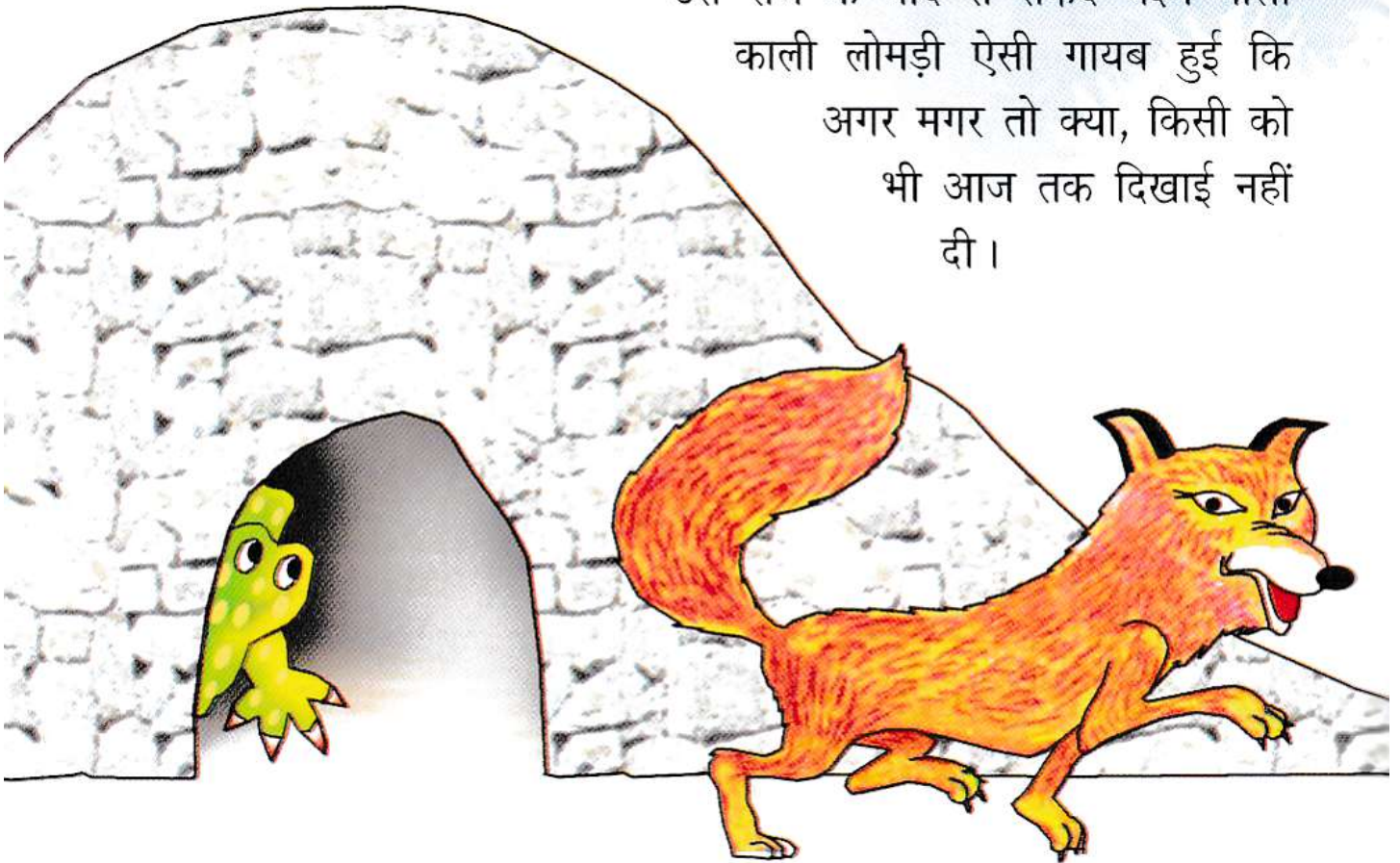
तिकड़मी जोशी

एक था जोशी। उसका नाम था झींगुरीलाल। वह जानता कुछ भी नहीं था, फिर भी महान ज्योतिषी होने का दावा करता था। एक रोज वह पड़ोस के नगर में जाने के लिए निकला। रास्ते में उसने देखा कि दो सफेद बैल पोखर
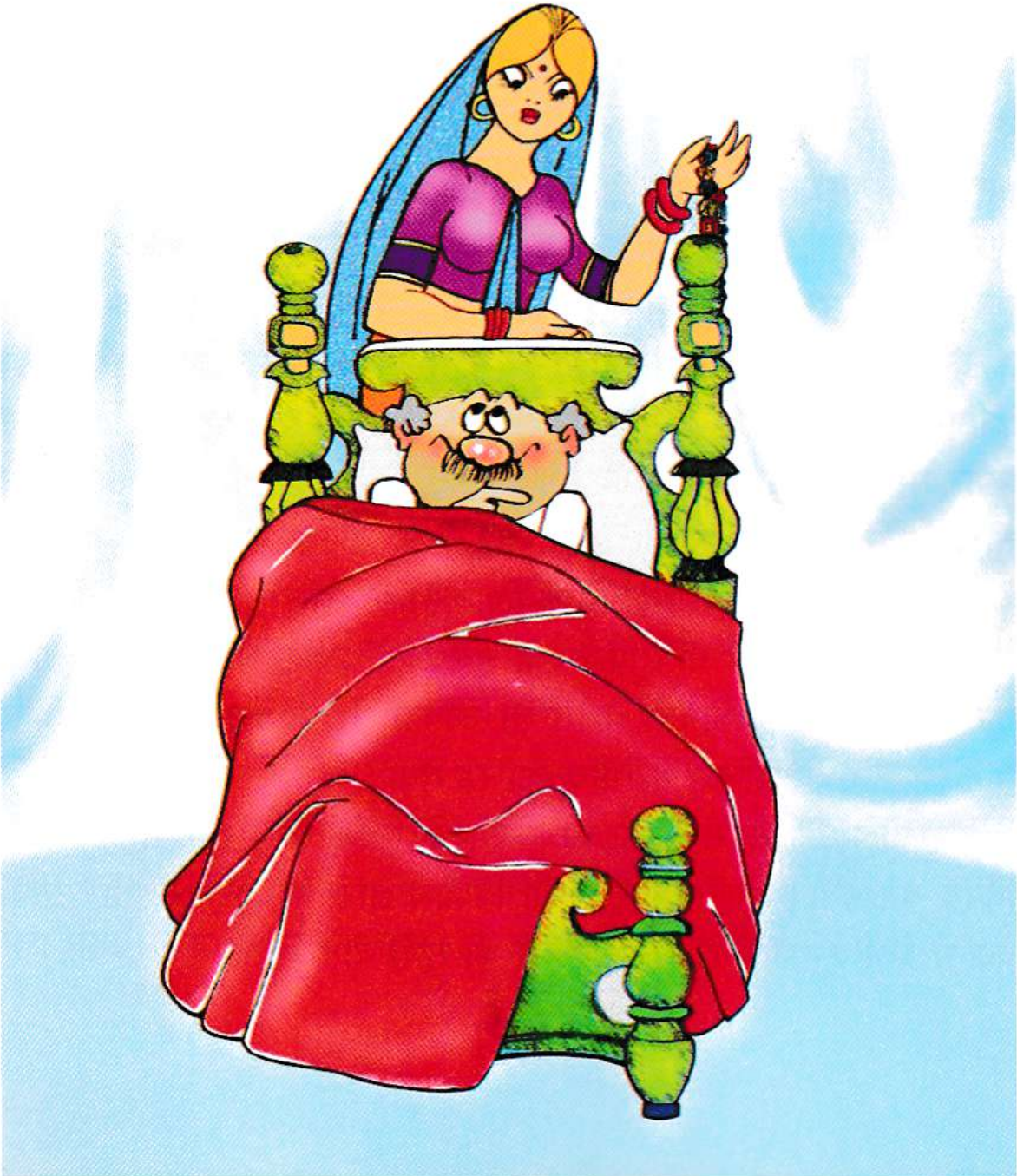
में पानी पी रहे हैं, छपाक-छपाक उड़ा भी रहे हैं। उसने यह बात अपने दिमाग में बैठा ली।

जोशी नगर में पहुंचा और एक बनिये के घर ठहरा। वहां उससे मिलने एक किसान आया। जोशी से उसने कहा, 'झींगुरीलाल, हमारे दो बैल खो गए हैं। क्या आप अपनी पोथी में देख कर बता सकते हैं कि वे कहां गए होंगे?' तिकड़मी जोशी ने कुछ श्लोक बुदबुदाए। फिर पूछा, 'क्या तुम्हारे बैल सफेद थे?' किसान तुरंत बोला, 'आपको कैसे पता चला?' उत्तर देने के बजाए उसने झूठ-मूठ पंचांग की पोथी खोली और दो-चार पन्ने उलट कर कहा, 'तुम्हारे बैल सिवान पर पोखर के पास हैं। जा कर ले आओ।'

किसान वहां पहुंचा तो उसे अपने दोनों बैल मिल गए। वह बहुत प्रसन्न हुआ और उसने सौ रुपए का एक नोट इनाम दे कर जोशी को भी खुश कर दिया।

दूसरे रोज जोशी की परीक्षा करने के लिए बनिये ने खुद उससे कहा, 'झींगुरीलाल, अगर आपका ज्योतिष शास्त्र सच्चा है तो बताइए कि आज हमारे घर में बाजरे की कितनी रोटियां बनी हैं?' जोशी के पास कोई काम तो था नहीं, इसलिए तवे पर डाली जाने वाली रोटियों की आवाज वह सुन रहा था। जब रोटी तवे पर गिरती, तपाक-सी आवाज उठती। यह आवाज उसने तेरह बार सुनी थी। फिर एक बार थोड़े श्लोक बोलने का दिखावा कर उसने कहा, 'श्रीमानजी, आज तो आपकी रसोई में तेरह रोटियां बनी हैं।' यह सुन कर बनिया भी भौंचक्का रह गया।

इन दो घटनाओं से तिकड़की जोशी का नाम सारे नगर में चर्चा का विषय बन गया। कोई कहता, जोशी त्रिकाल ज्ञानी है। कोई कहता, उसके वश में प्रेतों का राजा है, जो उसे राज की सारी बातें बताता है।

उन्हीं दिनों राजा की चहेती रानी का नौलखा हार गायब हो गया। जब राजा ने जोशी का बोलबाला सुना तो उसने फौरन सिपाही भेज कर उसे दरबार में बुलवाया।

'जरा अपनी पोथी में देख कर यह बताओ कि महारानी का हार कहां है? हार मिल गया तो हम तुम्हें निहाल कर देंगे।'

जोशी घबराया। गहरे सोच में पड़ गया। राजा ने आगे कहा, 'आज की रात तुम हमारे महल में रहो और रात भर जाप-जप करके सुबह तक हार ढूंढ़ निकालो। याद रखना, नाकाम रहे, तो कोल्हू में पेर कर तुम्हारा तेल निकाला जाएगा।'

रात ब्यालू करने के बाद तिकड़मी जोशी बिस्तर पर लेट गया। लेकिन उसे नींद नहीं आई। मन में डर घुसा था। सवेरे राजा के सिपाही आएंगे। वे हार मांगेंगे। नहीं दिया तो प्राण ले लेंगे। अपना दुख भलने के लिए वह खिड़की में से चांद को देख गुनगुनाने लगा :

चंदा है तू गले का फंदा है तू
यम का भी मरघट से न्योता है तू

वह ऊटपटांग गा रहा था और महल की एक दासी थर-थर कांप रही थी। संयोग से उसका नाम चंदा था और रानी का हार भी उसी ने चुराया था। वह घबरा गई। उसने सोचा...अपने परम ज्ञान के बल से जोशी को उसका नाम मालूम हो गया है। तभी तो फांसी के फंदे की बात कर रहा है। वह तुरंत हार ले कर जोशी के पास पहुंची और बोली, 'मुझे क्षमा कर दो, झींगुरीलाल! यह है नौलखा हार, इसे आप रखिए। कृपया मेरा नाम किसी को मत बताना। मैं आपके पांव पड़ती हूं।' जोशी मन ही

मन प्रसन्न हो कर उदारता से बोला, 'तुम्हें माफ किया। अब तुम एक काम हमारा कर दो। यह हार महारानी के कमरे में पलंग के नीचे रख दो।'

सवेरा होने पर सिपाही हाजिर हो गए। जोशी उनके साथ राजा के दरबार में आया और अंट-संट श्लोक बोलने लगा। फिर अपनी उंगलियों के पोर गिन कर पंचांग निकाला और दो-चार पन्ने उलट कर बोला, 'महाराज, मेरा शास्त्र कहता है कि महारानी का हार चोरी नहीं हुआ है। आप तलाश करवाइए। हार महारानी के कमरे में से ही मिलना चाहिए। उनके पलंग के नीचे से।'

फौरन तलाश करवाने पर हार पलंग के नीचे से मिल गया। राजा जोशी पर बहुत प्रसन्न हुआ और उसे दस हजार रुपए का नकद इनाम दिया। तभी उसे खयाल आया–जोशी को क्यों न एक बार और आजमाया जाए?

राजा ने तरकीब सोची और जोशी को अपने साथ शिकार पर ले गया। जोशी जब हिरनों के झुंड को कुलांचें भरते दौड़ते एकटक देख रहा था, तब राजा ने चुपके से एक झींगुर पकड़ कर अपनी मुट्ठी में बंद कर लिया। फिर जोशी से पूछा, 'अब बताओ, मेरी मुट्ठी में क्या है? याद रहे, गलत कहा तो तुम्हारा सिर यहीं कलम कर दिया जाएगा।'

जोशी झेंप गया। उसे लगा कि अब सारा भेद खुल जाएगा और यह पागल राजा उसे स्वर्ग-लोक की यात्रा पर भेज देगा। उसने इकरार करने के इरादे से सच-सच बता दिया :

रोटियां गिनी टप टप टपाक
दो बैल देखे छप छप छपाक
चंदा का फंदा दे गया हार
रोए झींगुर झर झर झपाक

झींगुर शब्द सुन कर राजा चकित हो गया। उसे भरोसा हो गया कि तिकड़मी जोशी सच्चा जोशी है, वरना उसे कैसे पता चलता कि महाराज की मुट्ठी में झींगुर फंसा है? राजा ने मुट्ठी खोली और झींगुर को उड़ाते हुए कहा, 'वाह जोशी, वाह! तुमने तो कमाल कर दिया।'

जोशी ने सोचा–बाल-बाल बच गया, वरना...।

राजा ने उसे दस हजार रुपए का और इनाम दिया और पूरे आदर के साथ महल से विदा किया।
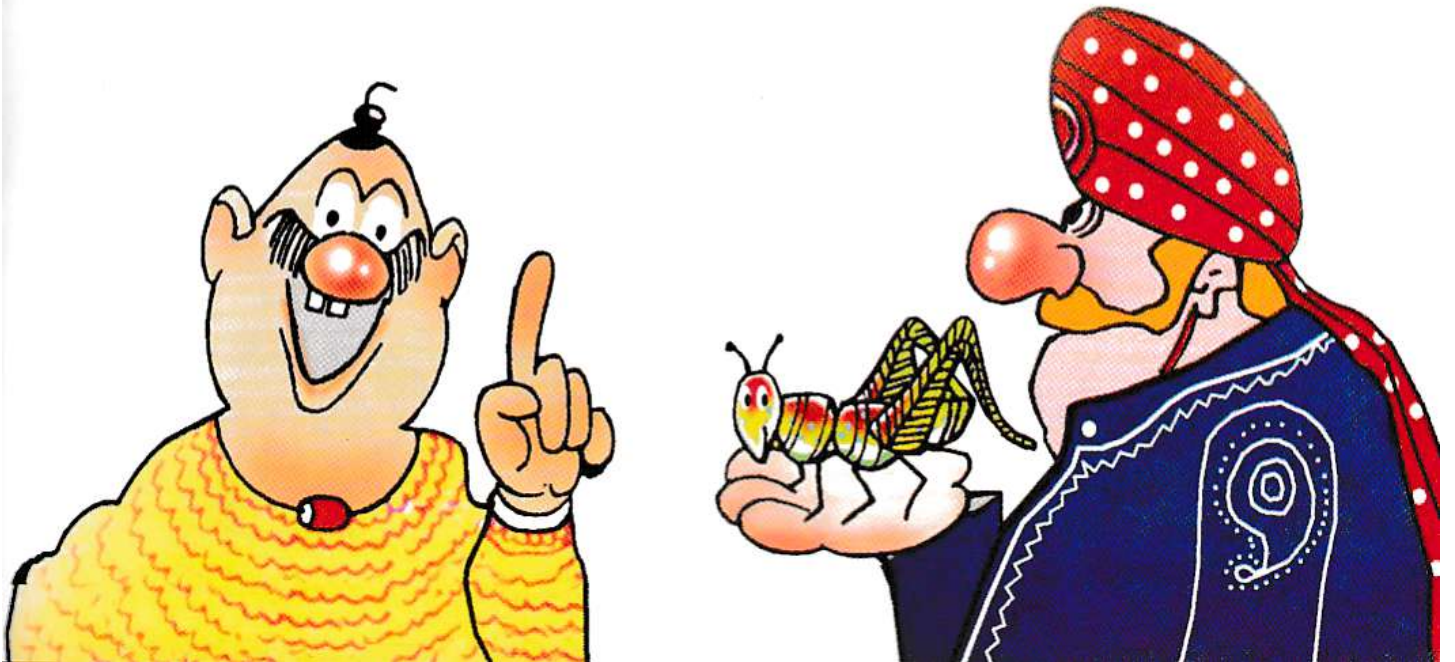
चीची चिड़िया

एक थी चिड़िया। एक रोज वह राजा के बाग में दाना चुग रही थी कि उसे एक मोती मिला। चिड़िया ने उसे अपनी चोंच में पहना और इठलाती हुई पेड़ पर जा बैठी। तभी वहां से राजा की सवारी निकली। उसे देख कर

चिड़िया बोली :

राजा तेरी रानी है रोती
देख के मेरी नाक में मोती
मोती है मेरा जगमग-जगमग
रानी है तेरी गड़बड़-गड़बड़

यह सुन कर राजा को ऐसी खीज चढ़ी कि चिड़िया को वह कच्ची चबा जाए। लेकिन उसने कुछ नहीं कहा। वह बगीचे में टहल कर वापस लौट गया। दूसरे रोज जब राजा दरबार में जा रहा था, चिड़िया ने फिर से गाना शुरू कर दिया :

राजा तेरी रानी है रोती
देख के मेरी नाक में मोती
मोती है मेरा जगमग-जगमग
रानी है तेरी गड़बड़-गड़बड़

इस बार राजा क्रोध में आगबबूला हो उठा। उसने जाल बिछवा कर चिड़िया को पकड़ लिया। जिस मोती के कारण चिड़िया अंट-संट बोल रही थी, वह भी उससे छीन लिया। लेकिन चिड़िया थी निडर। वह राजा से क्यों डरती? बोली :

राजा तू कैसा भिखमंगा
छीन लिया मेरा मोती चंगा
मर जा डूब संग रानी के
कल-कल कर बहती है गंगा

यह सुन कर राजा का पारा सातवें आसमान पर चढ़ गया। वह बड़बड़ाया–क्या मैं भिखारी हूं? हरगिज नहीं। मैं तो राजा हूं, राजा, मुझे भला किस बात की कमी है! तुरंत उसने चिड़िया को मोती लौटा दिया। चिड़िया भी कुछ कम नहीं थी। बोली :

राजा तू है कैसी वीर
दे दिया मोती बिन चलाए तीर
छोड़ के गद्दी जा जंगल में
बन जा संत महंत या बड़का पीर

इस बार राजा क्रोध में चिल्ला उठा, 'छोटा मुंह और बड़ी बात! पकड़ो इस नादान चिड़िया को।' सिपाहियों ने तुरंत उसे गिरफ्तार कर लिया। फिर उसका सिर मुंडवा कर उस पर चूना लगाया और उसे महल से बाहर खदेड़ दिया। चिड़िया जल-भुन कर बुदबुदाई, 'राजा के पूरे परिवार का सिर न मुंडवाऊं तो मेरा नाम चीची चिड़िया नहीं।' वह तुरंत उड़ी और शंकरजी के मंदिर में जा बैठी। वहां राजा रोजाना दर्शन को आता और पूजा करता :

हे शंकर भगवान दो
भर-भर के भंडार दो
अरबों दो फिर खरबों दो
फाड़-फाड़ के छप्पर दो।

रोज की तरह राजा ने आज भी सिर झुका कर शंकर भगवान की पूजा की, तो वहां छिपी चिड़िया आवाज बदल कर बोली, 'हम शिवजी बोल रहे हैं। राजा, तुम्हें फूटी कौड़ी भी नहीं मिलेगी।' राजा सोच में पड़ गया। कुछ समझ में नहीं आया तो उसने सिर नवा कर कहा, 'क्षमा करें भगवान! हमसे

कोई कसूर हुआ हो तो माफ कर दो। आप जो भी कहेंगे सो प्रायश्चित करेंगे, लेकिन छप्पर फाड़ के दो।' चिड़िया फिर बोली, 'तब तुम्हें और तुम्हारे परिवार को सिर मुंडवा कर माथे पर चूना लगवाना होगा। बोलो, है मंजूर?' राजा था लालची। अरबों-खरबों के लालच में उसने तुरंत हामी भर दी।

दूसरे रोज उसके पूरे परिवार ने सिर मुंडवाया, सिर पर चूना लगवाया और सभी मंदिर में आए। राजा ने कहा, 'हे भगवान! अब तो अरबों दो और खरबों दो, लेकिन छप्पर फाड़ के दो।' तभी मूर्ति के पीछे छिपी चिड़िया फुर्रर करती उड़ी। फिर बोली :

राजा मैंने बजा दिया तेरा बाजा
राजा मैंने बजा दिया तेरा बाजा
मैं सिर मुंडी तो तू भी है सिर मुंडा
राजा मैंने बजा दिया तेरा बाजा

यह सुन कर राजा ने अपना सिर पीट लिया।
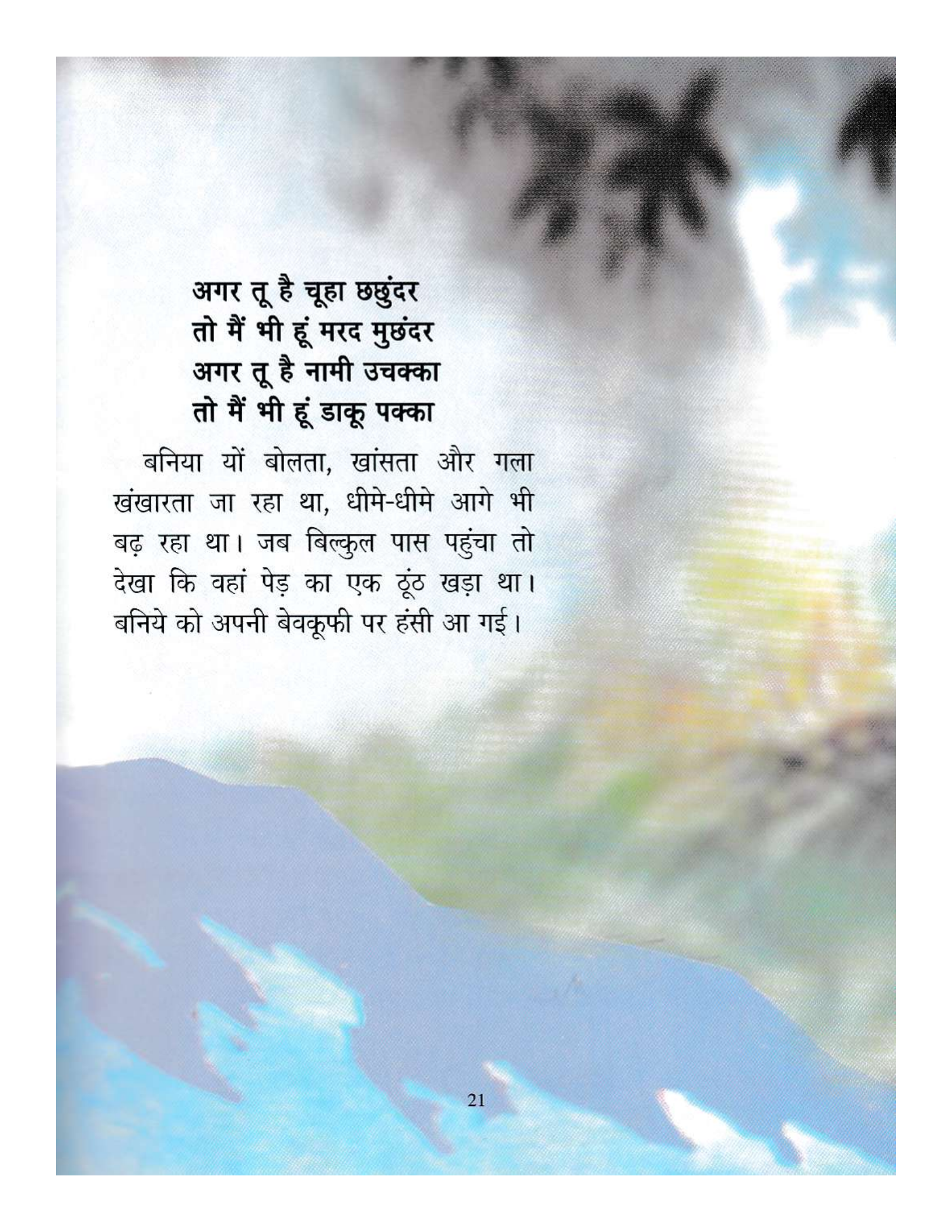
मैं हूं मरद मुछंदर

एक था बनिया। उसे घी खरीदना था। वह घी की कुप्पी और सौ रुपए ले कर दूसरे गांव जाने के लिए निकला। रास्ते में शाम हो गई। थोड़ी देर में अंधेरा भी छा गया। वह मारे डर के कांपने लगा। तभी उसने दूर में कुछ देखा। उसे शंका हुई–कोई चोर तो नहीं है! बनिये का दिल नगाड़े की तरह बजने लगा। फिर भी साहस जुटा कर उसने गला खंखर मूंछ पर ताव दिया और बोला :

अगर तू है चूहा छछुंदर
तो मैं भी हूं मरद मुछंदर
अगर तू है नामी उचक्का
तो मैं भी हूं डाकू पक्का

बनिया यों बोलता, खांसता और गला खंखारता जा रहा था, धीमे-धीमे आगे भी बढ़ रहा था। जब बिल्कुल पास पहुंचा तो देखा कि वहां पेड़ का एक ठूंठ खड़ा था। बनिये को अपनी बेवकूफी पर हंसी आ गई।

मुनिया रानी

एक थी बुढ़िया। जाने कहां से एक रोज उसके घर में एक गिलहरी आ गई। बुढ़िया बहुत खुश हुई। उसने गिलहरी का नाम मुनिया रखा। उसके लिए आंगन में झूला बांध उसे लिटा दिया। घर का काम करते-करते बुढ़िया कभी इधर तो कभी उधर जाती और गिलहरी को झुलाते-झुलाते लोरी गाती :

हाथ के लूंगी हजार पर एक
पांव के लूंगी हजार पचास
नाक के लूंगी लाख पर एक
आंख के लूंगी लाख पचास

एक रोज पास के गांव का राजा शिकार के लिए निकला था। उसने बुढ़िया की कुटिया के पास से गुजरते हुए लोरी सुनी। वह सोच में पड़ गया–'भला यह मुनिया रानी कौन होगी? बुढ़िया उसके लिए धर की ढेरी मांग रही है, तब जरूर ही वह बड़ी सुंदर होगी!'

राजा ने उससे ब्याह करने का फैसला किया। फिर बुढ़िया के पास जा कर कहा, ' मांजी, हमें अपनी बेटी दिखाओ। हम उससे शादी करना चाहते हैं।' बुढ़िया हंस कर बोली, 'महाराज, मेरी बेटी तो एक नन्हीं-सी गिलहरी है। भला आप उससे ब्याह कैसे कर सकते हैं?' राजा था सनकी। बुढ़िया की बात उसने नहीं मानी। वह बोला, 'मांजी, भले ही आपकी लाड़ली चौपाई हो, हम तो उसी से शादी करेंगे।' सुन कर बुढ़िया बोली, 'तब जाइए और सिर्फ एक कुल्हड़ भर कर रुपए ले आइए। मैं अपनी मुनिया बेटी का ब्याह आपसे करवा दूंगी।'

राजा रुपए लेने गया। बुढ़िया लालची थी। ढेर सारे रुपए झाड़ लेने की उसने एक तरकीब सोची और एक बड़ा गड्ढा खोदा। गड्ढे पर पीपा रखा। पीपे पर एक मटका रखा। मटके पर गगरी रखी और गगरी पर कुल्हड़ रखा। ऊपर से नीचे तक सबके पेंदों में छेद था। राजा आया। वह कुल्हड़ में रुपए डालने लगा। लेकिन कुल्हड़ भरता ही नहीं था। आखिर जब दस बोरे भर कर रुपए डाले गए, तब कुल्हड़ भरा और राजा का ब्याह गिलहरी से हुआ।

राजा ब्याह कर गिलहरी को महल में ले आया। उसने महल की सातवीं मंजिल पर उसके लिए सोने का एक छोटा-सा घर बनवाया। फिर फरमान जारी किया कि उस मंजिल पर कोई न जाए। महल में सब सोचने लगे, 'राजा जरूर किसी परी को ब्याह कर लाया होगा और उसे किसी की नजर न लगे, इसलिए प्रतिबंध लगाया होगा।' कोई व्यंग्य में कहता, 'राजा मोम की गुड़िया लाया होगा। कोई उसे छू दे और वह पिघल जाए तो?'

गिलहरी को रोज बढ़िया दाने डाले जाते थे। वह दाने खाती और अपने कमरे में फुदकती रहती। राजा दिन में दो बार उससे मिलने आता। उसे अपने हाथ पर बैठा कर छत पर घुमाता। कभी उसके साथ आंख-मिचौली भी खेलता। एक बार राजा के रसोइए ने जानना चाहा कि रानी कैसी होगी। उसने रानी को आजमाने का तय किया। फिर राजा से कहा, 'महाराज, क्या रानी माता रसोई के काम में हमारी थोड़ी मदद कर सकती हैं?' राजा बोला, 'जरूर, लेकिन काम क्या है।' रसोइए ने कहा, 'धान साफ कर चावल तैयार करने हैं।' राजा बोला,'ले आओ।' रसोइया तुरंत भंडार से धान की टोकरी ले आया। राजा ने वह टोकरी गिलहरी के पास रख दी। गिलहरी समझ गई। उसने अपने दांतों से धान के छिलके इस खूबी के साथ

निकाले कि एक भी दाना नहीं टूटा और एक ही रात में सारी टोकरी चावलों से भर गई।

सवेरे राजा ने टोकरी रसोइए को लौटा दी। चकाचक चावल के दाने देख कर वह दंग रह गया। तभी दीवान आया। वह भी रानी की परीक्षा लेना चाहता था। उसने राजा से पूछा, 'क्या राज माता गीली मिट्टी पर डिजाइन बना सकती हैं?' राजा ने तुरंत उत्तर दिया, 'इसमें कौन बड़ी बात है?' दीवान ने एक कमरे में फर्श पर गीली मिट्टी बिछा दी और राजा से कहा, 'रात भर में डिजाइन तैयार हो जाए तो बड़ी कृपा होगी।' जब

गिलहरी को मालूम हुआ तो उसने महल की छत पर से आवाज दी। करीब के पेड़-पौधों में खेल रही सारी गिलहरियां दौड़ आईं। फिर सबने मिल कर कमरे में इधर से उधर और उधर से इधर दौड़ शुरू कर दी। देखते-ही-देखते चिकनी मिट्टी पर बढ़िया आधुनिक डिजाईन तैयार हो गई। सवेरे फर्श देख दीवान भी चकित रह गया। उसने सोचा–रानी तो सचमुच बड़ी गुणी है।

थोड़े दिनों बाद राजा का दिल्ली जाना हुआ। उसने गिलहरी के लिए सोने के घर में पर्याप्त दाना-पानी रख दिया। लेकिन लौटने में उसको देर हो गई। दाना-पानी खत्म हो गया। गिलहरी को प्यास लगी। उसकी जबान सूखने लगी। जब रहा न गया तो वह गले में कुल्हड़ लटका कर कुएं पर पानी भरने गई। तभी आकाश में से शंकर-पार्वती का रथ निकला। शंकरजी ने पूछा, 'पार्वतीजी, क्या आप जानती हैं कि यह गिलहरी कौन है?' पार्वतीजी बोलीं, 'नहीं तो!' शंकरजी ने कहा, 'यह तो राजकुमारी है। इसे किसी ऋषि का शाप लगा है। इसीलिए इसको गिलहरी का जन्म लेना पड़ा।'

पार्वती को दया आ गई। उन्होंने शंकरजी से प्रार्थना की कि वे झटपट इस गिलहरी को फिर से राजकुमारी बना दें। शंकरजी ने आकाश में से चमत्कारी जल छिड़का। तुरंत गिलहरी सुंदरी बन गई। जब राजा दिल्ली से लौटा तो उसने सारा हाल सुना। वह बहुत खुश हुआ। उसने सारे नगरजनों को हलवा-पूड़ी खिलाई और आकाश में पटाखे छोड़े। सारा आकाश रंगीन हो गया।

अल्लम गल्लम करता हूं

एक था कौआ और एक थी मैना। दोनों में दोस्ती हो गई। मैना भोली थी, लेकिन कौआ धूर्त था। एक रोज मैना ने कहा, 'कौए भैया, कौए भैया, आओ हम खेत जोतें। फसल बढ़िया होगी तो हमें साल भर चुगने नहीं जाना पड़ेगा। हम चैन से जी सकेंगे।'

थोड़ी देर बाद दोनों खेत पर पहुंचे और चोंच से खोदने लगे। अभी खेत जोतने का काम शुरू हुआ ही था कि कौए की चोंच टूट गई। वह बोला, 'मैना बहन,
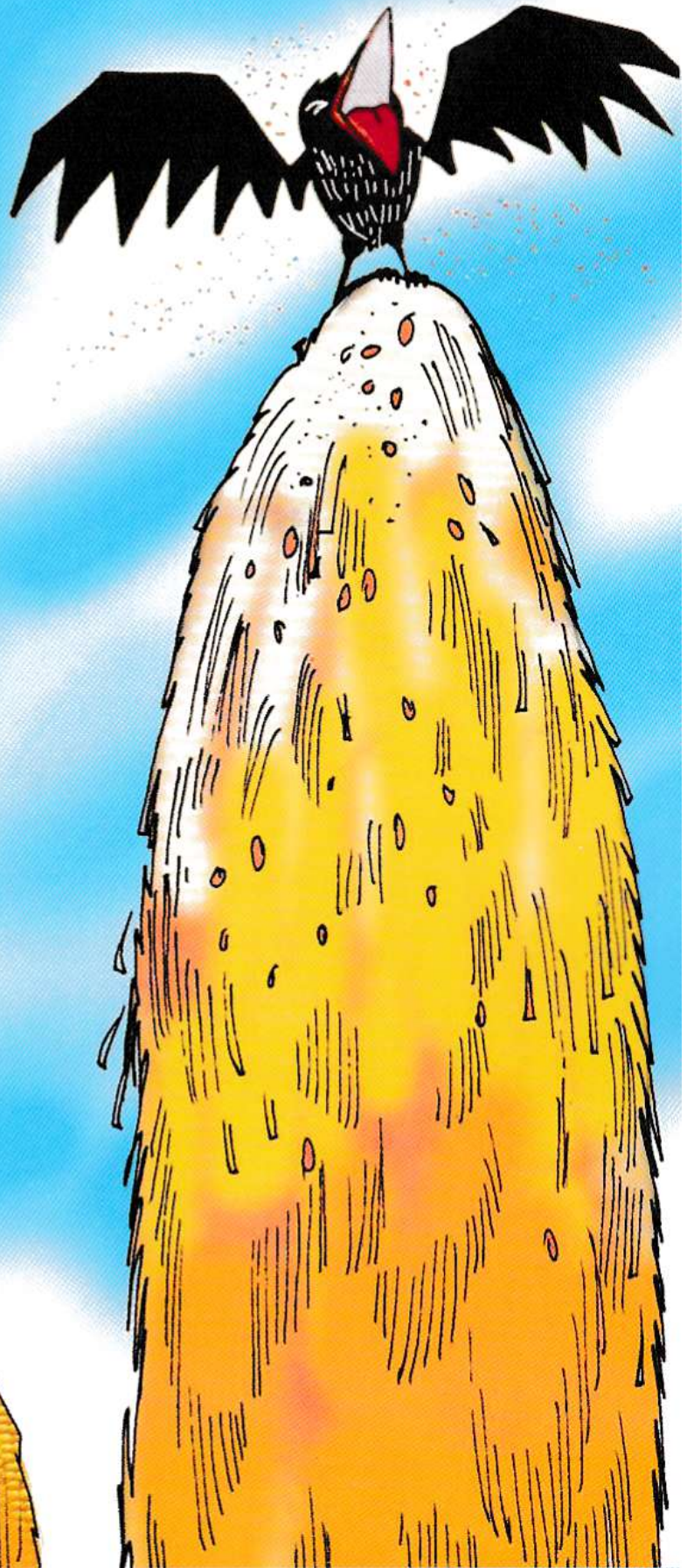
तुम खेत तैयार करो। मैं लोहार के पास चोंच बनवा कर आता हूं। बस यों गया और यों आया।'

मैना ने दिन-रात मेहनत कर सारा खेत जोता, लेकिन कौआ नहीं आया। उसकी नीयत खोटी थी। इसलिए चोंच बन जाने के बाद भी वह पेड़ पर बैठ लोहार से गपशप लड़ाता रहा।

मैना कौए की बाट जोहते-जोहते थक गई, तो उसे बुलाने आई, 'कौए भैया, कौए भैया, चलो न! जुताई का काम कब का खत्म हो चुका है। अब बोआई शुरू करनी है।' कौआ बोला :

अल्लम गल्लम करता हूं
चोंच नई बनवाता हूं
जाओ बहन मैं आता हूं

मैना लौट गई। खेत पर पहुंच कर उसने बोआई शुरू कर दी। बढ़िया बाजरा बोया। चंद दिनों में कोंपलें फूटीं और पौधे बढ़ने लगे। अब समय खेत निराने का था। इसलिए मैना फिर से कौए को बुलाने गई। कहा, 'कौए भैया, कौए भैया, बाजरा बढ़िया उगा है। अब जल्द ही निरा लेना चाहिए वरना फसल को चिड़ियां खा जाएंगी। सारी मेहनत बेकार जाएगी।' पेड़ पर बैठे-बैठे ही कौए ने कहा :

अल्लम गल्लम करता हूं
चोंच नई बनवाता हूं
जाओ बहन मैं आता हूं

मैना फिर लौट आई। उसने अकेले ही सारे खेत की निराई की। कुछ दिनों के बाद फसल काटने का समय आया, तो कौए के पास जा कर उसने

कहा, 'कौए भैया, कौए भैया, अब तो चलो।' कटाई में देर करेंगे तो भारी नुकसान होगा।' कौए ने अपने उसी निराले अंदाज में कहा :

अल्लम गल्लम करता हूं
चोंच नई बनवाता हूं
जाओ बहन मैं आता हूं
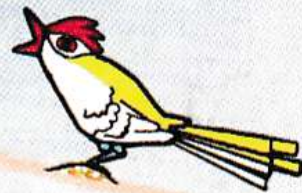
मैना निराश होकर वापस आई और जोश में भर कर उसने खुद ही सारी फसल काट ली। फिर उसने बाजरे के भुट्टों में से दाने निकाले। एक तरफ बाजरे का ढेर लगाया और दूसरी तरफ भूसे का बड़ा ढेर बना कर उस पर थोड़ा बाजरा फैला दिया ताकि देखने में वह भी बाजरे का ढेर लगे। अब वह आखिरी बार कौए को बुलाने आई। बोली, 'कौए भैया, कौए भैया, अब तो चलोगे न! मैंने बाजरे की ढेरियां तैयार कर ली हैं। जो ढेर चाहो आप रख लेना।'

कौआ बड़ा खुश हुआ कि बिना मेहनत किए ही उसे हिस्सा मिलेगा। बोला, 'बहना, मैं तो खुद ही तुम्हारे पास आने वाला था।...अब मेरी चोंच एकदम सही हो गई है।'

कौआ और मैना दोनों खेत पर पहुंचे। मैना ने मुस्करा कर कहा, 'कौए भैया, कौए भैया, जो भी ढेरी आपको ठीक लगे, वह आपकी।'

बढ़ी ढेरी हड़प लेने के विचार से कौआ भूसे वाले ढेर पर जा बैठा, लेकिन जैसे ही वह बैठा कि उसके पांव भूसे में धंसने लगे। भूसा उसकी आंखों में भरने लगा, कानों में घुसने लगा। यही नहीं, उसके मुंह में भी भूसा भर गया। छटपटा कर वह थोड़ी देर में मर भी गया...राम बोलो भाई राम...फिर सारा बाजरा समेट कर मैना अपने घर पहुंच गई।

मूंछों वाली नानी

एक थे दूल्हे मियां और दूसरे थे चांद भाई। दोनों नवाबजादे थे। लेकिन दोनों में फर्क आकाश-पाताल का था। दूल्हे मियां गांव के मुखिया और पांच-पच्चीस लाख के मालिक भी थे जबकि चांद भाई के घर ठनठन गोपाल!

दूल्हे मियां की अपनी हवेली थी। जो भी आता हुक्का-पानी पीता, खाना खाता और अपने घर जाता। दूसरी तरफ चांद भाई की कोठी में
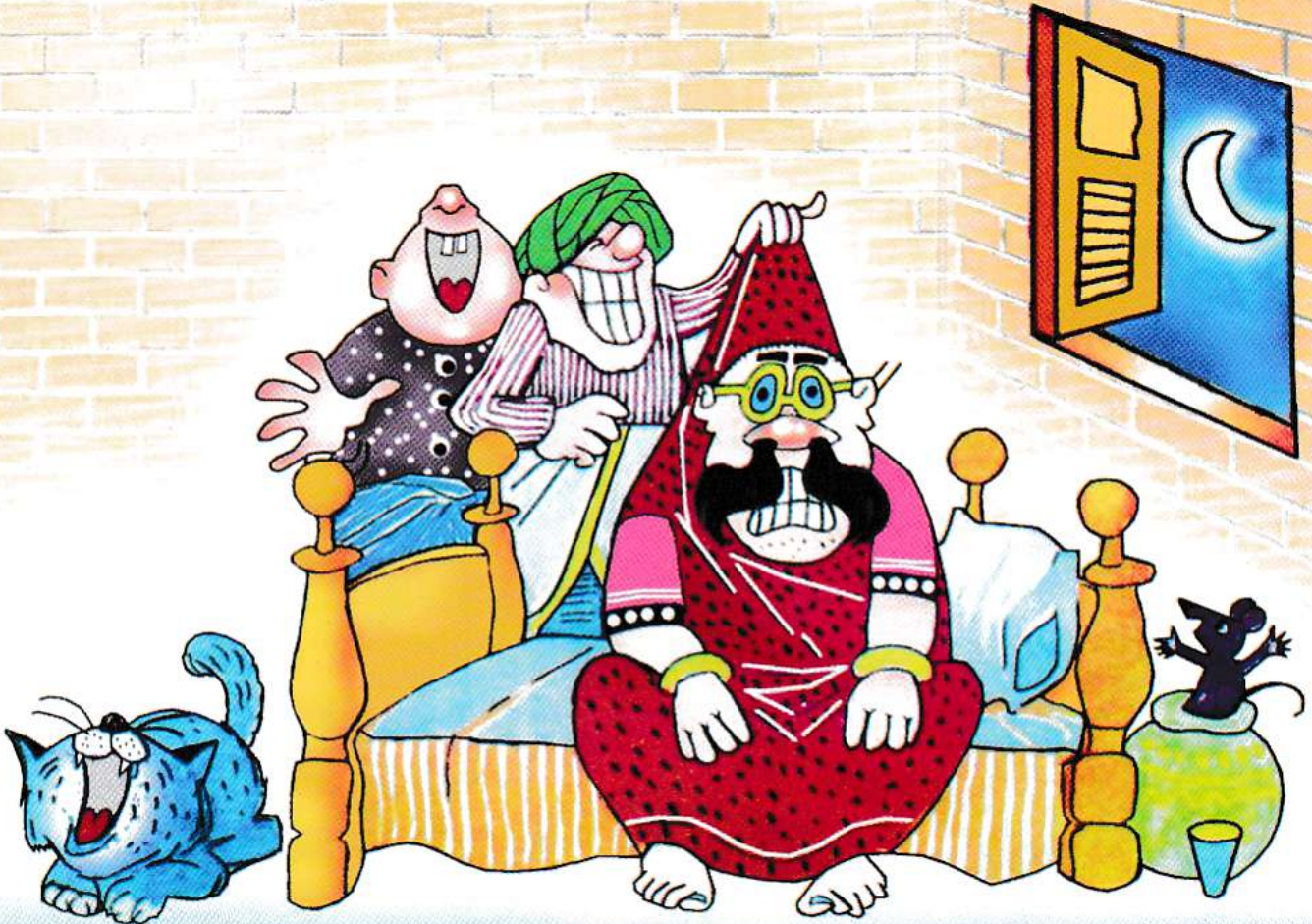
चमगादड़ें उड़ रही थीं। उनकी चौखट पर आया हुआ फकीर भी भूखा लौट जाता। लेकिन उनकी जबान बड़ी मीठी थी। वह एक बढ़िया घोड़ा भी रखते थे। उजले सफेद कपड़े पहनते और चौपाल पर बैठ गप्पें हांका करते थे। वे जहां भी जाते, दामाद के ठाठ से रहते और मौज करते।

चांद भाई ने दूल्हे मियां से दोस्ती कर ली। दूल्हे मियां को किसी बात की कमी तो थी नहीं। चांद भाई साल में दो-तीन महीने उनकी हवेली में रहते। खाते-पीते और चैन की बंसी बजाते। विदा लेते समय आग्रह के साथ कहते, 'दूल्हे मियां, कभी तो आप हमारे गरीबखाने में तशरीफ लाइए!'

संयोग से एक बाद दूल्हे मियां को ससुराल जाना हुआ। रास्ते में चांद भाई का गांव था। उन्होंने सोचा–बार-बार इसरार कर चांद भाई कहते रहे हैं कि हमने कभी उन्हें मेहमाननवाजी का मौका नहीं दिया। चलो, इस बार उनकी कोठी पर ही दावत हो जाए।

दूल्हे मियां और उनके मित्रों ने अपने घोड़े चांद भाई के गांव की ओर मोड़ दिए। किसी ने चांद भाई को खबर पहुंचाई। वह परेशान हो उठे। सोचा, दूल्हे मियां की हवेली पर मैंने महीनों दावतें खाई हैं। अब मैं उन्हें क्या खिलाऊंगा? घर में तो फाके चल रहे हैं! तभी दूल्हे मियां का घोड़ा हिनहिनाया। दूल्हे मियां ने बाहर से पुकारा, 'चांद भाई घर पर हैं?' बेचारे चांद भाई मुंह कैसे दिखाते? वह तो बेगम का बुरका पहन कर लेट गए। दूल्हे मियां कोठी में आए और चांद भाई की बीवी से पूछा, 'भाभी जान, चांद भाई दिखाई नहीं देते। कहां गए हैं इस वक्त?' बीवी झूठ बोली, 'वह तो आगरा गए हैं। कल तक लौट आएंगे।' दूल्हे मियां के मन में शंका हुई। सोचा, कुछ गड़बड़-घोटाला मालूम पड़ता है। चौक में तो खबर मिली थी कि वह घर पर ही हैं।

दूल्हे मियां ने फिर पूछा, 'खाट पर यह कौन लेटा है? कोई बीमार तो नहीं है न?' बीवी फिर झूठ बोली, 'यह तो हमारे मियां की नानी हैं। सिर में दर्द है, इसलिए आराम फरमा रही हैं।' अब दूल्हे मियां की नजर बुरके में से दिख रहे जूतों पर ठहरी। वह समझ गए। उन्होंने मजा लेते हुए कहा, 'यहां तक हम आए हैं, तो नानी से दुआ-सलाम कर लें। उनकी सेहत के बारे में जान लें।' यह कह कर वे चांद भाई की तरफ मुड़े और पूछा, 'क्यों नानी जान, आपके सिर में अचानक दर्द कैसे शुरू हो गया?' चांद भाई क्या बोलते? मुंह खुलते ही राज भी खुल जाने वाला था। इस कारण वे खामोश ही रहे। इस बार दूल्हे मियां ने चांद भाई के चेहरे पर से नकाब उठाते हुए चोट की, 'नानी जान, क्या आपने मूंछें रख लीं, इसलिए आपके सिर में दर्द हो रहा है?' दूल्हे मियां के साथ आए हुए सारे दोस्त ठहाका लगा कर हंस दिए। वहां एक भाट भी मौजूद था। उसने तुरंत ललकारा :

चांद भाई तो ऐश करें जी
खाएं दूल्हे मियां की सिवइयां
नानी को निकली हैं मूंछें
यह कैसा युग है मेरी मैया

आगे पढ़िए भाग - 7

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA